अध्याय 4

तीन लेवीय कुल

गिनती 4 में लेवियों की दूसरी गणना शामिल है। अध्याय 3 की तुलना में इस गणना का एक अलग ही उद्देश्य है। पिछली गणना इसलिए की गई कि बारह गोत्रों के पहलौठे पुरुषों के साथ एक महीना और उससे ऊपर की आयु के पुरुष लेवियों की संख्या की तुलना की जा सके। अध्याय 4 में गणना इसलिए की गई कि यह निश्चित किया जा सके कि तीस से पचास वर्ष तक के ऐसे कितने लेवी हैं जो याजकीय गोत्र को दिए गए कार्यों को करने के लिए उपलब्ध हैं। जिस समय यह अध्याय संकेत देता है कि लेवियों ने तीस वर्ष की आयु में निवासस्थान में अपनी सेवकाई आरम्भ की तब 8:24, 25 कहती हैं कि "पच्चीस वर्ष की आयु से लेकर उससे अधिक आयु के लेवियों ने मिलापवाले तम्बू से सम्बन्धित काम करने के लिये भीतर प्रवेश किया" और "पचास वर्ष" की आयु में उन्हें भीतर सेवा करने से मुक्त कर दिया गया। गॉर्डन जे. वेनहैम ऐसा मानते हैं कि अध्याय 8 में दिया गया पद अध्याय 4 (9:1 और 1:1 के बीच तुलना करें) में दी गई दिनांक से पहले की दिनांक प्रकट करता है अध्याय 4 और लेवियों की सेवा की आरम्भिक आयु का समय पच्चीस वर्ष से तीस वर्ष तक (कुछ कारणों) से बढ़ा दिया गया।[1] आर. के. हैरिसन ने एक वैकल्पिक विवरण देते हुए कहा कि ऐसा हो सकता है कि लेवियों ने पच्चीस वर्ष की आयु में सेवा के कार्य सीखना आरम्भ किया हो और बाद में तीस वर्ष की आयु में पूर्ण क्षमता के साथ सेवा करना आरम्भ कर दिया हो[2] (8:23-26 पर टिप्पणियाँ देखें)।

प्रत्येक तीनों लेवीय कुल अर्थात कहातियों, गेर्शोनवंशियों और मरारीवंशियों की गिनती की जानी थी (4:1, 2, 21, 22, 29, 30)। इन तीनों कुलों अथवा गोत्रों को लेवियों के तीन पुत्रों के अनुसार नाम दिया गया: कहात, गेर्शोन और मरारी। परमेश्वर ने प्रत्येक कुल की भूमिका की भी सूचना उपलब्ध करवाई।

कहातियों की ज़िम्मेदारियाँ (4:1-20)

[1]फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, [2]"लेवियों में से कहातियों की, उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार, गिनती करो, [3]अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु वालों में, जितने मिलापवाले तम्बू में काम-काज करने को भरती हैं। [4]और मिलापवाले तम्बू में परमपवित्र वस्तुओं के विषय कहातियों का यह काम होगा। [5]अर्थात् जब जब छावनी का कूच हो तब तब हारून और उसके

**पुत्र भीतर आकर, बीचवाले परदे को उतार के उससे साक्षीपत्र के सन्दूक को ढाँप
दें; [6]तब वे उस पर सूइसों की खालों का आवरण डालें, और इसके ऊपर सम्पूर्ण
नीले रंग का कपड़ा डालें, और सन्दूक में डण्डों को लगाएँ। [7]फिर भेंटवाली रोटी
की मेज़ पर नीला कपड़ा बिछाकर उस पर परातों, धूपदानों, करछों, और उंडेलने
के कटोरों को रखें; और नित्य की रोटी भी उस पर हो; [8]तब वे उन पर लाल रंग
का कपड़ा बिछाकर उसको सूइसों की खालों के आवरण से ढाँपें, और मेज़ के डण्डों
को लगा दें। [9]फिर वे नीले रंग का कपड़ा लेकर दीपकों, गुलतराशों, और गुलदानों
समेत उजियाला देनेवाले दीवट को, और उसके सब तेल के पात्रों को, जिनसे उसकी
सेवा टहल होती है, ढाँपें; [10]तब वे सारे सामान समेत दीवट को सूइसों की खालों
के आवरण के भीतर रखकर डण्डे पर धर दें। [11]फिर वे सोने की वेदी पर एक नीला
कपड़ा बिछाकर उसको सूइसों की खालों के आवरण से ढाँपें, और उसके डण्डों को
लगा दें; [12]तब वे सेवा टहल के सारे सामान को लेकर, जिससे पवित्रस्थान में सेवा
टहल होती है, नीले कपड़े के भीतर रखकर सूइसों की खालों के आवरण से ढाँपें,
और डण्डे पर धर दें। [13]फिर वे वेदी पर से सब राख उठाकर वेदी पर बैंजनी रंग
का कपड़ा बिछाएँ; [14]तब जिस सामान से वेदी पर की सेवा टहल होती है वह सब,
अर्थात् उसके करछे, काँटे, फावड़ियाँ, और कटोरे आदि, वेदी का सारा सामान उस
पर रखें; और उसके ऊपर सूइसों की खालों का आवरण बिछाकर वेदी में डण्डों को
लगाएँ। [15]और जब हारून और उसके पुत्र छावनी के कूच के समय पवित्रस्थान
और उसके सारे सामान को ढाँप चुकें, तब उसके बाद कहाती उसके उठाने के लिये
आएँ, पर किसी पवित्र वस्तु को न छूएँ, कहीं ऐसा न हो कि मर जाएँ। कहातियों
के उठाने के लिये मिलापवाले तम्बू की ये ही वस्तुएँ हैं। [16]जो वस्तुएँ हारून याजक
के पुत्र एलीआज़ार को देख-भाल के लिये सौंपी जाएँ वे ये हैं, अर्थात् उजियाला
देने के लिये तेल, और सुगन्धित धूप, और नित्य अन्नबलि, और अभिषेक का तेल,
और सारे निवास, और उसमें की सब वस्तुएँ, और पवित्रस्थान और उसके कुल
सामान।" [17]फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, [18]"कहातियों के कुलों के
गोत्रियों को लेवियों में से नष्ट न होने देना; [19]उनके साथ ऐसा करो कि जब वे
परमपवित्र वस्तुओं के समीप आएँ तब न मरें परन्तु जीवित रहें; अर्थात् हारून
और उसके पुत्र भीतर आकर एक एक के लिये उसकी सेवकाई और उसका भार
ठहरा दें, [20]और वे पवित्र वस्तुओं के देखने को क्षण भर के लिये भी भीतर आने न
पाएँ, कहीं ऐसा न हो कि मर जाएँ।"**

आयतें 1-4. कहाती एक प्रमुख कुल था जबकि शायद कहात लेवी का पहलौठा पुत्र नहीं था।[3] मूसा और हारून को आज्ञा दी गई कि **लेवियों में से कहातियों की, उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार, गिनती करें।** वे जो **तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु** के थे जितने **मिलापवाले तम्बू में काम-काज करने को भरती** थे जिससे **परमपवित्र वस्तुओं** की देखभाल की जा सके और उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक लेकर जाया जा सके। कहातियों की ज़िम्मेदारियों को ऊपरी तौर से पहले सूचीबद्ध इसलिए किया गया क्योंकि कहात को लेवी के तीनों कुलों

में सबसे महत्वपूर्ण माना जाता था। उनका काम निवासस्थान की "परमपवित्र वस्तुओं" के साथ जुड़ा हुआ था।

आयतें 5-14. परमेश्वर ने विस्तृत विवरण दिया कि किस प्रकार **हारून और उसके पुत्र बीचवाले परदे को उतार के उससे साक्षीपत्र के सन्दूक को ढाँप दें**; तब वे उस पर **सूइसों की खालों** का आवरण डालें, और इसके ऊपर सम्पूर्ण **नीले रंग का कपड़ा** डालें। साक्षीपत्र के सन्दूक को ढाँपने के लिए जो "बीचवाले परदे" काम में लिए जाते थे वे नीले, बैंजनी और लाल रंग के थे जिन्हें पवित्रस्थान को परमपवित्र स्थान से अलग करने के लिए लटकाया जाता था जिससे दोनों कक्षों को अलग किया जा सके (निर्गमन 26:31-33)। साक्षीपत्र के सन्दूक को परदों से और अन्य वस्तुओं से ढाँप कर रखा जाता था जिससे लोग उसे देखने के लिए भीतर आकर मर न जाएँ (4:20)। साक्षीपत्र का सन्दूक पवित्र था जिसकी व्याख्या परमेश्वर के सिंहासन के रूप में की गई थी (1 शमूएल 4:4; 2 शमूएल 6:2; 2 राजा 19:15)।

साक्षीपत्र के सन्दूक को सही तरीके से लेकर जाने के लिए आवश्यक था कि **सन्दूक में डण्डों** को लगाया जाए। ये डण्डे बबूल की लकड़ी से बनवाए गए और उन्हें सोने से मढ़वाया गया (निर्गमन 25:13)। जैसा कि इन डण्डों को साक्षीपत्र के सन्दूक में ही रहने दिया जाता था (निर्गमन 25:15; 37:5), यह शायद इसलिए था कि हारून उनको बराबर कर सके। साक्षीपत्र के सन्दूक को डण्डों पर इसलिए उठाया जाता था कि कहाती इसे छूए नहीं और अपवित्र न कर दें (देखें 2 शमूएल 6:6, 7)।

इसी प्रकार के **नीले** और **लाल रंग** और **सूइसों की खालों का आवरण** निवासस्थान की अन्य वस्तुओं पर भी डाल दिया गया। एक बार जब सारी वस्तुओं को यात्रा के लिए तैयार कर दिया जाता था तब कहाती "साक्षीपत्र के सन्दूक" को (4:5, 6); **भेंटवाली रोटी की मेज़** और उससे जुड़ी हुई **परातों, धूपदानों, करछों, और उंडेलने के कटोरों को** (4:7, 8); **दीपकों, गुलतराशों, और गुलदानों समेत उजियाला देनेवाले दीवट को** (4:9, 10); धूपवेदी (**सोने की वेदी**; 4:11, 12); और होमबलि की **वेदी** ("पीतल की वेदी"; NIV; 4:13, 14) को लेकर चलते थे। कुछ कारण से निवासस्थान के बाहर रखे जाने वाली हौदी को इस सूची से हटा दिया गया।

आयत 15. यह परमेश्वर के नियम के विरुद्ध था कि याजकों को छोड़ कोई और व्यक्ति निवासस्थान की पवित्र वस्तुओं को छूए या देखे (4:15, 20) इस कारण याजकों के लिए आवश्यक था कि वे निवासस्थान में प्रवेश करें और वहाँ की प्रत्येक वस्तु को कहातियों के द्वारा उन्हें लिए चलने से पहले ढाँप दें। परमेश्वर ने कहा, **"जब हारून और उसके पुत्र छावनी के कूच के समय पवित्रस्थान और उसके सारे सामान को ढाँप चुकें, तब उसके बाद कहाती उसके उठाने के लिये आएँ, पर किसी पवित्र वस्तु को न छूएँ, कहीं ऐसा न हो कि मर जाएँ।"**

आयत 16. कहातियों के द्वारा किया जाने वाला कार्य **हारून याजक के पुत्र एलीआज़ार** की देखभाल में किया जाना था **जो उजियाला देने के लिये तेल, और**

सुगन्धित धूप, और नित्य अन्नबलि, और अभिषेक के तेल के लिए व्यक्तिगत रुप से ज़िम्मेदार था। उसकी **ज़िम्मेदारी** में **सारे निवास, और उसमें की सब वस्तुएँ, और पवित्रस्थान और उसके कुल सामान** भी शामिल थे। कहातियों के साथ सम्बन्ध के कारण एलीआज़ार प्रत्यक्ष रूप से अपने भाई ईतामार पर प्रमुख था जिसके प्रति लेवियों के अन्य दो कुल ज़िम्मेदार थे (4:28, 33)। अपने पाप के कारण मरने वाले नादाब, अबीहू के बाद हारून के ये दो पुत्र ही शेष रह गए थे (लैव्य. 10)। हारून के पश्चात एलीआज़ार महायाजक बना (20:25-28)।

आयतें 17-20. नीले और लाल रंग और सूइसों की खालों का आवरण इसलिए था कि कहातियों को निवासस्थान की वस्तुओं से बचाया जा सके जब वे उन्हें लेकर चलते हैं जिससे वे **लेवियों के गोत्र से अलग न कर दिए जाएँ**। इस कारण निवासस्थान की प्रत्येक वस्तु को कम से कम दो आवरणों से ढाँप कर सुरक्षित किया जाता था। एक बार जब याजक पवित्र वस्तुओं को ढाँप देता था तब लेवी तम्बू में प्रवेश कर सकते थे, उन्हें उठा सकते थे और इस काम के लिए तैयार किए गए डण्डों का प्रयोग करते हुए उन्हें अगले ठहराव तक लेकर जा सकते थे। **हारून और उसके पुत्रों** के लिए यह आवश्यक था कि वे प्रत्येक व्यक्ति को **उसकी सेवकाई और उसका भार ठहरा दें**। कहातियों का काम इस चेतावनी के साथ था: **वे पवित्र वस्तुओं के देखने को क्षण भर के लिये भी भीतर आने न पाएँ, कहीं ऐसा न हो कि मर जाएँ।**

गेर्शोनियों की ज़िम्मेदारियाँ (4:21-28)

[21]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, [22]"गेर्शोनियों की भी गिनती उनके पितरों के घरानों और कुलों के अनुसार कर; [23]तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयुवाले, जितने मिलापवाले तम्बू में सेवा करने को भरती हों उन सभों को गिन ले। [24]सेवा करने और भार उठाने में गेर्शोनियों के कुलवालों की यह सेवकाई हो; [25]अर्थात् वे निवास के पटों, और मिलापवाले तम्बू और उसके आवरण और इसके ऊपरवाले सूइसों की खालों के आवरण और मिलापवाले तम्बू के द्वार के परदे, [26]और निवास, और वेदी के चारों ओर के आँगन के परदों, और आँगन के द्वार के परदे, और उनकी डोरियों, और उनमें काम में आनेवाले सारे सामान, इन सभों को वे उठाया करें; और इन वस्तुओं से जितना काम होता है वह सब भी उनकी सेवकाई में आए। [27]गेर्शोनियों के वंश की सारी सेवकाई हारून और उसके पुत्रों के कहने से हुआ करे, अर्थात् जो कुछ उनको उठाना, और जो जो सेवकाई उनको करनी हो, उनका सारा भार तुम ही उन्हें सौंपा करो। [28]मिलापवाले तम्बू में गेर्शोनियों के कुलों की यही सेवकाई ठहरे; और उन पर हारून याजक का पुत्र ईतामार अधिकार रखे।"

आयतें 21-23. गेर्शोनियों की गिनती, जो कि लेवीय कुलों में दूसरे स्थान पर थे जिनकी ज़िम्मेदारियों पर चर्चा की गई है, **उनके पितरों के घरानों और कुलों** के

अनुसार की जानी थी। **तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक** की आयुवाले पुरुषों को **मिलापवाले तम्बू में सेवा करने के लिए भरती** किया जाना था।

आयतें 24-28. गेर्शोनियों के कुलवालों की सेवकाई यह थी कि वे **निवास के पटों, और मिलापवाले तम्बू और उसके आवरण** को **मिलापवाले तम्बू के द्वार के परदे**, और **आँगन के परदों** की देखभाल करें और उन्हें **उठाया करें** और साथ ही आँगन के निर्माण में इसी प्रकार की वस्तुओं को उठाया करें (4:25, 26)। **हारून** [महा] **याजक** अपने **पुत्रों** के साथ इस काम पर नियुक्त किया गया (4:27)। उनके निरीक्षण के लिए **ईतामार** सीधे रूप से ज़िम्मेदार था (4:28)।

मरारियों की ज़िम्मेदारियाँ (4:29-33)

29"फिर मरारियों को भी तू उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिन ले; 30तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु वाले, जितने मिलापवाले तम्बू की सेवा करने को भरती हों उन सभों को गिन ले। 31और मिलापवाले तम्बू में की जिन वस्तुओं के उठाने की सेवकाई उनको मिले वे ये हों, अर्थात् निवास के तख्ते, बेंड़े, खम्भे, और कुर्सियाँ, 32और चारों ओर के आँगन के खम्भे, और इनकी कुर्सियाँ, खूँटे, डोरियाँ, और भाँति भाँति के काम का सारा सामान ढोने के लिये उनको सौंपा जाए उसमें से एक एक वस्तु का नाम लेकर तुम गिन दो। 33मरारियों के कुलों की सारी सेवकाई जो उन्हें मिलापवाले तम्बू के विषय करनी होगी वह यही है; वह हारून याजक के पुत्र ईतामार के अधिकार में रहे।"

आयतें 29-33. मरारियों के कुल को, जो लेवीय कुल में तीसरे स्थान पर था, इसी प्रकार गिना गया जिससे वे **मिलापवाले तम्बू की सेवा करने को भरती हों। तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु वाले लोगों** को मिलापवाले तम्बू और इसके आँगन के भारी हिस्सों को उठाने की ज़िम्मेदारी दी गई अर्थात **तख्ते**, **बेंड़े**, **खम्भे**, **और कुर्सियाँ** और **खूँटे** उठाना और साथ ही इन वस्तुओं से जुड़े हुए **सामान** उठाना (4:31, 32)। गेर्शोनियों के समान मरारियों को **याजक हारून के पुत्र ईतामार** के अधिकार के अन्तर्गत कार्य करना था (4:33)।

गणना का परिणाम (4:34-49)

34तब मूसा और हारून और मण्डली के प्रधानों ने कहातियों के वंश को, उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार, 35तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष की आयु के, जितने मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने को भरती हुए थे, उन सभों को गिन लिया; 36और जो अपने अपने कुल के अनुसार गिने गए वे दो हज़ार साढ़े सात सौ थे। 37कहातियों के कुलों में से जितने मिलापवाले तम्बू में सेवा करने वाले गिने गए वे इतने ही थे; जो आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा दी थी उसी के अनुसार मूसा और हारून ने इनको गिन लिया।

[38]गेर्शोनियों में से जो अपने कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिने गए, [39]अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु के, जो मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने को भरती हुए थे, [40]उनकी गिनती उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार दो हज़ार छः सौ तीस थी। [41]गेर्शोनियों के कुलों में से जितने मिलापवाले तम्बू में सेवा करनेवाले गिने गए वे इतने ही थे; यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा और हारून ने इनको गिन लिया।

[42]फिर मरारियों के कुलों में से जो अपने कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिने गए, [43]अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु के, जो मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने को भरती हुए थे, [44]उनकी गिनती उनके कुलों के अनुसार तीन हज़ार दो सौ थी। [45]मरारियों के कुलों में से जिनको मूसा और हारून ने, यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार जो मूसा के द्वारा मिली थी, गिन लिया वे इतने ही थे।

[46]लेवियों में से जिनको मूसा और हारून और इस्राएली प्रधानों ने उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिन लिया, [47]अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु वाले, जितने मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने और बोझ उठाने का काम करने को हाजिर होने वाले थे, [48]उन सभों की गिनती आठ हज़ार पाँच सौ अस्सी थी। [49]ये अपनी अपनी सेवा और बोझ ढोने के लिए यहोवा के कहने पर गए। जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उसी के अनुसार वे गिने गए।

आयतें 34-49. इस अध्याय का अन्तिम भाग इन तीन लेवीय कुलों की गिनती का परिणाम प्रदान करता है। जिनकी **गिनती** की गई वे पुरुष **तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष की आयु के** थे जो **मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने को भरती हुए थे** (4:35; देखें 4:41, 43)। इस जनगणना ने ये आँकड़े उपलब्ध करवाए:

कहाती	2,750
गेर्शोनी	2,630
मरारी	3,200
कुल	8,580

इन तीन कुलों की गिनती का योग 8,580 (4:48) होता है। यह संख्या लेवियों की कुल संख्या के सम्बन्ध में तार्किक लगती है जो (22,000) अध्याय 3 में दी गई है।

यह अध्याय गिनती के प्रथम तीन अध्यायों के समान बल देता है कि इस्राएलियों ने **परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार किया** (4:37, 41, 45, 49)।

अनुप्रयोग

"न मरें परन्तु जीवित रहें" (4:19)

कहातियों के द्वारा पवित्र वस्तुओं को देखे जाने या छूने से पहले ही याजकों का एक महत्वपूर्ण कार्य यह था कि वे उन्हें ढाँप दें; उन्हें यह कार्य करना होता था जिससे लेवी "मरें नहीं परन्तु जीवित रहें" (4:19)। मात्र याजकों को यह अधिकार था कि वे निवासस्थान की पवित्र वस्तुओं को देख सकें या उन्हें उठा सकें। कोई अन्य व्यक्ति अगर पवित्र वस्तुओं को छूता था तो उसकी मृत्यु निश्चित थी। याजकों के इस कार्य को मसीही लोगों की कुछ ज़िम्मेदारियों की समानता में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, मसीही माता पिता अपने बच्चों को सांसारिक गतिविधियों में भाग लेने से क्यों रोकें जिनमें अन्य जवान बच्चे शामिल होते हैं? ऐसा इसलिए है कि वे "मरें नहीं परन्तु जीवित रहें।" कलीसिया के निरंकुश सदस्यों को कलीसिया के द्वारा अनुशासित क्यों किया जाना चाहिए जो पश्चात्ताप करने से मना करते हैं? ऐसा इसलिए है कि वे "मरें नहीं परन्तु जीवित रहें" (देखें 1 कुरि. 5:5; याकूब 5:19, 20)। मसीही लोग अपने मित्रों और परिवार के सदस्यों को क्यों समझाएँ कि वे मसीह की आज्ञा के अनुसार चलें? ऐसा इसलिए है कि वे "मरें नहीं परन्तु जीवित रहें।"

समाप्ति नोट्स

[1]गॉर्डन जे. वेनहैम, *गिनती*, द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1981), 97-98, एन. 2. [2]आर. के. हैरिसन, *गिनती: एन एक्सेजेटिकल कमेंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1992), 81. [3]वंशावली की सूची में कहात से पहले गेर्शोन आता है (उत्पत्ति 46:11; निर्गमन 6:16; गिनती 3:17; 1 इतिहास 6:1), जो यह सुझाता है कि गेर्शोन पहलौठा था।